Article

नवबौद्धों में धम्म–दर्शन की प्रकृतिः एक विश्लेषण

भरत कुमार भारती*

शोध सारांश

लगभग 21 वर्षों तक चिंतन मनन करने के उपरान्त डॉ० अम्बेडकर ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति की सीमा से बाहर नहीं जाना है। इसी भारतीय संस्कृति के संरक्षण में जब उन्होंने पाया कि बुद्ध के धम्म में सब कुछ विद्यमान है, जिसे इस देश के लोगों की आवश्यकता थी। तब धर्मान्तर की घोषणा के 21 वर्षों बाद बाबा साहेब डॉ० अम्बेडकर ने 14 अक्टूबर 1956 में धम्म विजय दशमी को बौद्ध धर्मान्तर किया और बुद्ध–धम्म के उन्हीं पहलुओं पर ज़ोर दिया जिसकी वंचित समाज को आवश्यकता थी। इस वृहत्त धर्मान्तर की घटना ने पूरी दुनिया के विद्वानों का ध्यान बुद्ध–धम्म की तरफ आर्कषित किया। इसी घटना को विद्वानों ने नवयान या नव–बौद्ध कहा। डॉ० अम्बेडकर की धर्म सम्बन्धी अवधारणा यह है कि 'दर्शन कोई भी हो जितना वह वास्तविक समस्याओं से उपर (दूर) होता है, उतना ही वह समाज के लिए निरुपयोगी सिद्ध होता है। इसी संदर्भ में डॉ० अम्बेडकर ने दार्शनिक चिंतन की विषय वस्तु को परमार्थ से उतार कर व्यवहार का विषय बनाया तथा व्यवहारिक सत्ता से ही व्यवहारिक समस्याओं का समाधान ढूँढ़ा।

विषय संकेतः नवयान, नवबौद्ध, धम्म, थेरवादी, बौद्ध धर्मान्तरण, बौद्ध महापरिषद्, प्रज्ञा, शील, करुणा, मैत्री, शुद्ध विज्ञानवाद, मानवतावादी–दर्शन, नैतिक–दर्शन।

नवबौद्धों में धम्म–दर्शन का स्वरूप

थेरवादी नवबौद्धों की संख्या का भारी अनुपात हिन्दू धर्म के दलित व अछूत समाज से धर्मान्तरित हुआ है। इसलिए वह जिन–जिन सिद्धान्तों से घोर नफरत करता है, उन सिद्धान्तों में यदि कहीं कोई अच्छा गुण भी विद्यमान है, तो भी वह मात्रा उन्हीं पहलुओं को देख पाता है जिससे उसका नुकसान हुआ है। वह उसके अच्छे गुण को नजर अन्दाज कर देता है। उसके मन में ऐसे सिद्धान्तों के प्रति कट्टर विरोधाभास विद्यमान रहने के कारण तथागत के धम्म में दीक्षित होने के तद्नन्तर भी यदि बौद्ध धर्म के दर्शन में हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों का सम्मिश्रण दिखता है तो वह बौद्ध दर्शन के उन पहलुओं को भी या तो नकार देता है अथवा उसकी शुद्धिकरण का प्रयास करता है अथवा उसे बुद्ध–वचन मानने से इन्कार करता है। हिन्दू धर्म के अन्ध–विश्वास, ईश्वरवाद, आत्मा, परमात्मा इत्यादि में शोषण से मुक्ति के लिए ही उसने धर्मान्तरण किया था यथा वह बौद्ध–दर्शन में यदि कहीं दने सिद्धान्तों को परिलक्षित होने का सन्देह करता है तो भावावेश में उस पर तर्क करने लगता है और परिणामतः परम्परावादी बौद्धों के दर्शन से मत भिन्नता बन जाती है। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने अपने धर्मान्तरण भाषण में कहा था **''मैं आज नरक से मुक्त हुआ हूँ, आज मेरा पुर्नजन्म हो रहा है।''**[1] नवबौद्धों के धम्म–दर्शन में जिस मत–भिन्नता को लिखने का प्रयास इस लेख के माध्यम से किया जा रहा है। उसे बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर के इस कथन से जान सकते हैं–**''सिद्धार्थ ने प्रव्रज्या क्यों ग्रहण की?''** परम्परागत उत्तर है कि उन्होंने प्रव्रज्या इसलिए ग्रहण की क्योंकि उन्होंने एक रोगी, बाद में एक वृद्ध व्यक्ति तथा एक मुर्दे की लाश को देखा था।

*पी.एच.डी. स्कॉलर, दर्शन शास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय।

E-mail Id: bharatbhartee@gmail.com

Orcid Id: http://orcid.org/0000-0001-5474-1929

Digital Object Identifier (DOI): https://doi.org/10.24321/2456.0510.201702

ISSN: 2456-0510

© ADR Journals 2017. All Rights Reserved.

SAMPLE COPY

स्पष्ट ही यह उत्तर गले के नीचे उतरने वाला नहीं। जिस समय सिद्धार्थ ने प्रव्रज्या ग्रहण की थी उस समय उनकी आयु 29 वर्ष की थी। यदि सिद्धार्थ ने इन्हीं तीन दृश्यों को देखकर प्रव्रज्या ग्रहण की तो यह कैसे हो सकता है कि 29 वर्ष की आयु तक सिद्धार्थ ने कभी किसी बूढ़े, रोगी तथा लाखों मृत व्यक्ति को देखा ही न हो? यह जीवन की ऐसी घटनाएं हैं, जो रोज की हजारों–लाखों घटती रहती हैं और सिद्धार्थ ने 29 वर्ष की आयु होने से पहले भी इन्हें देखा ही होगा। इस परम्परागत मान्यता को स्वीकार करना असम्भव है कि 29 वर्ष की आयु होने तक सिद्धार्थ ने एक बूढ़े, रोगी तथा मृत व्यक्ति को देखा ही नहीं था और 29 वर्ष की आयु होने पर ही प्रथम बार देखा। यह व्याख्या तर्क कसौटी पर कसने पर खरी उतरती प्रतीत नहीं होती।[2] इसी प्रकार डॉ. अम्बेडकर ने अपने ग्रन्थ **'भगवान बुद्ध और उनका धम्म'** में लिखा है–''तिपिटक में भी जो **'बुद्ध–वचन'** करके माना गया है, उसे भी **'बुद्ध–वचन'** स्वीकार करने में बड़ी सावधानी की आवश्यकता है। लेकिन इसकी कसौटी विद्यमान है। भगवान बुद्ध के बारे में एक बात बड़े ही विश्वास के साथ कही जा सकती है, वे कुछ नहीं थे, यदि उनका कथन 'बुद्धि–संगत' नहीं होता। दूसरी बातों का यथा योग्य मूल्यांकन करते हुए यह बात कही जा सकती है कि जो बात 'बुद्धि–संगत' है, जो बात 'तर्क–संगत' है, 'बुद्ध–वचन' है।[3]

बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर येवला (महाराष्ट्र) में 13 अक्टूबर 1935 को एक महापरिषद् की, उस परिषद् में लगभग 10,000 अछूत लोग सम्मिलित थे। उस परिषद् में उन्होंने हिन्दू धर्म त्यागने की घोषणा की और कहा कि, ''मैं हिन्दू धर्म में पैदा हुआ यह मेरे वश की बात नहीं थी, किन्तु अब मैं हिन्दू होकर मरूँगा नहीं।''[4] उनके हिन्दुत्व को नकारने की घोषणा के पीछे दलित समाज पर सदियों से लादी हुई ब्राह्मणवादियों के धार्मिक, सामाजिक और सांसकृतिक गुलामी से मुक्ति का कारण था। धर्मान्तरण की आवश्यकता के महत्व का प्रतिपादन करते हुए बाबा साहेब ने कहा कि, ''तुम्हारी इंसानियत के लिए धर्मान्तरण करना आवश्यक हो गया है। अपनी इस मटियामेट जिन्दगी को सुनहरा असवर प्राप्त करा देने के लिए मुझे धर्मान्तरण की आवश्यकता हो रही है।[5] बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की धर्मान्तरण घोषणा के उपरान्त, उनके प्रभाव को देखते हुए उन्हें तथा उनके अनुयायियों को रिझाने के लिए इसाई, मुस्लिम, आर्य समाजी सभी ने अपने–अपने सामर्थ को झोंक दिया। उस समय डॉ. अम्बडेकर एक व्यक्ति नहीं बल्कि दासता मुक्ति रूपी विचारधारा के रूप में तब्दील हो चुके थे। जिसे करोड़ों दलितों, शोषितों अछूतों एवं महिलाओं ने अपनी नर्क रूपी जीवन से मुक्ति के मार्ग रूप में देखा।

बाबा साहेब के पास दूसरे धर्मों की तरह तो नहीं वरन् बौद्धधर्म भी अपने ग्रंथी के रूप में पहुँचा। बाबा ने उनका गंभीर अध्ययन किया और आसानी से नहीं लगभग 21 वर्षों तक चिंतन मनन करते रहे, शोध करते रहे कि हमें अपनी संस्कृति की सीमा से बाहर नहीं जाना है। इसी भारतीय संस्कृति के संरक्षण में जब उन्होंने पाया कि बुद्ध के धम्म[6] में सब कुछ विद्यमान है जिसे इस देश के लोगों की आवश्यकता है। तो सचमुच उल्लास में आकर कहा–''वह चीज मिल गयी, जिसे मैं ढूंढ़ रहा था, बल्कि जितना चाहता था, उससे भी अधिक मात्रा में मिली।[7] धर्मान्तरण की घोषणा के 21 वर्षों बाद बाबा साहेब ने 14 अक्टूबर 1956, धम्म–विजय दशमी को बौद्ध धर्मान्तरण किया और बुद्ध–धम्म के उन्हीं पहलुओं पर जोर दिया जिसकी वंचित समाज को आवश्यकता थी।

बी.बी.सी. लन्दर में सन् 1956 के मई मास में अपने व्यक्तव्य में डॉ. अम्बेडकर ने कहा '' मुझे बौद्ध धर्म पसन्द है क्योंकि वह संयुक्त रूप से तीन तत्वों का प्रतिपादन करता है, जिन्हें अन्यधर्मों में संयुक्त रूप से कहीं नहीं पाया जाता। बौद्ध धर्म प्रज्ञा की शिक्षा देता है जिसका मतलब है मिथ्या विश्वासों को दूर करने वाली निर्मल बुद्धि। वह करुणा अथात् मैत्री तथा समानता की शिक्षा देता है। यही आदमी के अच्छे और सुखी जीवन के लिए आवश्यक भी है। न कोई भगवान और न कोई आत्मा मनुष्य को अपने द्वारा पैदा किए हुए नरक से मुक्ति दिला सकते हैं।''[8]

डॉ. अम्बेडकर का धर्म–दर्शन

डॉ. अम्बेडकर की धर्म दर्शन संबंधी अवधारणा यह है कि दर्शन कोई भी हो जितना वह वास्तविक मानवीय समस्याओं से ऊपर होता है उतना ही वह समाज के लिए निरुपयोगी सिद्ध होता है। उनकी विचारधारा में ऐसे दर्शन का न कोई स्थान है और न मूल्य। वे एक व्यवहारवादी तत्ववेत्ता थे। उनके दर्शन और धर्म के आधार हमेशा जीवन और समाज के यर्थाथ तथ्य रहे हैं। उन्होंने धर्म की जितनी यथार्थ व्याख्या की उतनी ही वैज्ञानिक उनकी दार्शनिक दृष्टि रही है। इस लिए वह धर्म से बढ़कर सद्धम्म की संकल्पना प्रस्तुत करते हैं जो उनका एक दर्शन ही प्रतीत होता है। तथा उस धम्म दर्शन के सबल आधार वे जीवन के कठोर तथ्यों में ही ढूँढते हैं। इस प्रकार उनके धर्म दर्शन की

SAMPLE COPY

 ISSN: 2456-0510

सामाजिक उपयोगिता के मान से ग्यारह दशाएं हैं जो निम्न प्रकार हैं।

1) मन के मैले को दूर कर उसे निर्मल बनाना।[9]
2) संसार को धर्म राज्य बनाना।[10]
3) सभी के लिए ज्ञान के द्वार खोलना।[11]
4) स्वयं अन्धा होकर दूसरों को मशाल दिखाने जैसा पण्डिताऊपन न करना।[12]
5) प्रज्ञावान बनना अर्थात् जनहित की दृष्टि रखना तथा इसी जीवन में सुख विहार करना।[13]
6) शीलवान बनना ताकि उसके हाथ की प्रज्ञा खतरे में पड़े आदमी की रक्षा कर सके।[14]
7) प्रज्ञा तथा शील के साथ कारुणिक भी होना जिससे दरिद्रों, अनाथों और बूढ़ों की सहायता हो सके तथा दूसरों को ऐसा करने की प्रेरणा मिल सके।[15]
8) प्रज्ञा, शील, करुणा से भी आगे बढ़कर कल्याण मित्र बनना ताकि समाज में प्राणिमात्र के लिए मैत्री भावना की जा सके।[16]
9) समानता के ऊँचे आदर्श को जीवन में अपनाना सद–धर्म या धम्म दर्शन हैं।[17]
10) आदमी का मूल्यांकन उसके जन्म से नहीं बल्कि उसके कर्म से करना।[18]
11) विभिन्न मुनष्यों में समानता लाने के लिए जीवन में न्याय की स्थापना करना।[19]

विश्लेषणात्मक रूप से देखने पर आठवीं शिक्षा में प्रज्ञा, शील, करुणा तथा मैत्री पर बल दिया है। यह उनके दर्शन का केन्द्र बिन्दु है। ये मूल्य उन्होंने तथागत बुद्ध से ग्रहण किये हैं। यह कहा जा सकता है बुद्ध ने दुनिया के दर्शनों में स्वर्णिम मानवतावादी दर्शन को खोजा था। अम्बेडकर मानव समाजवादी दार्शनिक के रूप में बुद्ध के आधुनिक युग के उत्तराधिकारी है। उनके दर्शन को धर्म दर्शन इसी अर्थ में कहा जा सकता है जिस अर्थ में दर्शन तथा विज्ञान दोनों के सामंजस्य से समाज के लिए आविष्कारक चिंतन अर्थात् दर्शन विज्ञान रहता है वह समाज के लिए सार्थक तथा अविमरणीय होता है।

डॉ. अम्बेडकर धर्म एवं दर्शन की व्याख्या को इस प्रकार बताते हैं। धर्म–दर्शन किस प्रकार सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है? जब तक धर्म का उद्देश्य सामाजिक कार्यों को इस प्रकार व्यवस्थित करना नहीं होता कि सब लोगों को इसी जीवन में सुख एवं आनन्द मिले, तब तक वह सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने योग्य नहीं बन सकता। इसीलिए डॉ. अम्बेडकर ने धर्म के चार महत्वपूर्ण महलू बताये हैं, जो इस प्रकार हैं:–

1) धर्म–दर्शन नैतिकता पर आधारित हो–समाज में बहुसंख्यक लोग शांति से जीना चाहते हैं। कुछ थोड़े से लोगों की भाँति वे झगड़ा फसाद नहीं करते। कानून व्यवस्था केवल झगड़े–फसाद के समय समाज में शांति व्यवस्था को बलपूर्वक कायम रख सकती है। सामान्य जीवन में व्यवस्था कायम करने के लिए नैतिकता के आधार की अत्यन्त जरूरत होती है। यह जरूरत धर्म पूरी कर सकता है यदि वह नैतिकता पर आधारित हो। डॉ. अम्बेडकर ने कहा है ''समाज को अपनी एकता बनाये रखने के लिए ये तो कानून का आश्रय लेना पड़ेगा या फिर नैतिकता का। दोनों के बिना समाज टुकड़े–टुकड़े हो जायेगा। अतः प्रत्येक समाज में अच्छे संबंधों को निर्धारित करने के लिए नैतिकता पर आधारित धर्म–दर्शन प्रमुख होन चाहिए।[20]

2) धर्म दर्शन का दूसरा आवश्यक पहलू यह है कि उसे वैज्ञानिक होना चाहिए। वह एक सामाजिक संदेश बने बिना सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर सकेगा। अतः डॉ. अम्बेडकर के शब्दों में धर्म को यदि वास्तव में कार्य करना है तो उसे बुद्धि या तर्क पर आधारित होना चाहिए जिसका दूसरा नाम विज्ञान ही है।[21]

3) धर्म–दर्शन का तीसरा आवश्यक पहलू है–धर्म–दर्शन को नैतिकता के साथ स्वतंत्रता समानता तथा भ्रातृत्व को जीवन के मूलभूत सिद्धांतों के रूप में स्वीकार करना चाहिए। जिसका अटूट संबंध धर्म–दर्शन तथा भ्रातृत्व के बीच है।[22]

4) धर्म–दर्शन का चौथा आवश्यक पहलू यह है कि निर्धनता का अनुमोदन नहीं करना चाहिए। निर्धनता समाज में आर्थिक असमानता की खाई को गहराती है। मार्क्स ने धर्म–दर्शन को अफीम कहा है इससे उनका अभिप्राय धर्म–दर्शन के द्वारा निर्धनता की तारीफ करना ही है। ईश्वरवादी धर्म–दर्शन प्रायः यही करते हैं। ईसाई धर्म–दर्शन में भी गरीबी का उदात्तिकरण किया गया है। गाँधी ने भी इसी आधार को लेकर ईश्वर को ''दरिद्रनारायण'' कहा–निर्धन ईश्वर के समान है; ईश्वर निर्धनों के ह्रदय में रहता है। डॉ. अम्बेडकर गरीबी को सामाजिक बुराई मानते थे, न कि शुभ अवस्था। उनके अनुसार निर्धनता को शुभ अवस्था घोषित करना, धर्म–दर्शन को भ्रष्ट करने के समान है, ''बुराई तथा अपराध को बढ़ावा देना है और इस संसार को नर्क के समान

SAMPLE COPY

बनाना है''[23] इसलिए धर्म–दर्शन को निर्धनता का उदात्तिकरण नहीं करना चाहिए।

इसके अतिरिक्त डॉ. अम्बेडकर की दृष्टि में धर्म–दर्शन को आवश्यक रूप से ये भी कर्त्तव्य करना चाहिए कि वह जीवन की पवित्रता बनये रखने, जीवन में पूर्णता प्राप्त कराने, निर्वाण की ओर ले जाने, तृष्णा का त्याग करने, अनात्मवाद, अनित्यवाद तथा दुःखवाद को समझने और मानव जीवन के नैतिक संस्थान के आधारभूत कर्म–नियम की स्थापना में अपना योगदान दे।[24]

डॉ. अम्बेडकर का स्पष्ट कथन था कि, वह धर्म जो विज्ञान के अनुकूल है, जो समाज की आचार संहिता हो, जो गरीबी की बढ़ाई नहीं करता, जो सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक, राजनैतिक स्वतंत्रता को अहिंसक पद्धति से बहाल करता है, जो पुरुष तथा स्त्री में बराबरी को मानता है और जो यहीं तथा अभी के संदर्भ में मनुष्य की मुक्ति का महामार्ग है, बौद्ध धर्म है।

बुद्ध ने दार्शनिक चिंतन की विषय वस्तु को परमार्थ से उतार कर व्यवहार का विषय बनाया तथा व्यवहारिक सत्ता से ही व्यवहारिक समस्याओं का समाधान ढूँढा। इसी अर्थ में डॉ. अम्बेडकर कहते है कि अनिश्वरवाद तथा अनात्मवाद बौद्ध धर्म के दो कुल्हाड़े है। बिना इनकी सहायता के अ–बौद्ध मान्यताओं के झाड़–झाखांड़ को साफ किए बिना बौद्ध धम्म की आधारशिला रखी ही नहीं जा सकती।

डॉ. अम्बेडकर ने नवबौद्धों[25] को बाइस प्रतिज्ञाएं करायी, जिनका सार यही है कि ईश्वर, आत्मा, परमात्मा, भाग्य, भगवान, परलोक, देवी–देवता, पुनर्जन्म के विचार आदि से लेकर धर्म के नाम पर किये जाने वाले पाखण्डों को नवबौद्ध नहीं मानेंगे। वे केवल तर्क पूर्ण वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील विचारों को ही स्वीकार करेंगे।[26]

संविधान के जरिए हर भारतवासी के लिए एक मनुष्य, एक मूल्य और एक मत का तत्व अपनाकर भारत देश राजनैतिक दृष्टि से समानता को प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता, समता एवं बंधुता पर आधारित नव समाज के निर्माण कार्य में एक कदम आगे बढ़ा। फिर भी वह पर्याप्त नहीं था। क्योंकि यह तत्व राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक जीवन में लागू होने थे। इसलिए 29 नवम्बर 1949 को भारतीय संविधान सभा में संविधान पारित होते समय डॉ. अम्बेडकर ने राष्ट्र को चेतावनी दी थी कि 26 जनवरी 1950 को हम राजनैतिक जीवन में समान होगें और सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में असमान। हमें इस विषमता को जल्द से जल्द हटाना होगा, वरना उस विषमता के शिकार हुए लोग राजनैतिक प्रजातंत्र का यह ढ़ांचा उखाड़कर फेंक देंगे। इसलिए डॉ. अम्बेडकर नैतिकता पर आधारित धम्म की वकालत करते है। जिसकी पूर्ति बुद्ध का धम्म करता है।

''डॉ. अम्बेडकर की मान्यता थी कि वर्ण व्यवस्था पर आधारित विषमता ग्रस्त समाज को समता में ढ़ालने के लिए बौद्ध धम्म के सिवाय कोई चारा नहीं है।''[27]

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारत में सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक विषमता के परिणाम स्वरूप ही आज हजारों लोग उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक बौद्ध धर्मान्तरण कर रहे हैं। यह सिलसिला लगातार देखने को मिल रहा है, हाल ही में बिहार, उत्तर प्रदेश और गुजरात आदि प्रदेशों में सैकड़ों लोगों ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया तथा इसी में वे अपनी सामाजिक, धार्मिक मुक्ति का मार्ग देख रहे हैं।

जिस तरह (Resion) तर्क/विज्ञान कांट के दर्शन में आते–आते (Pure Resion) शुद्ध विज्ञान हो जाता है, ठीक उसी प्रकार बुद्ध का विज्ञानवादी दर्शन, अम्बेडकर के दर्शन में आकर (Pure Scientific) शुद्ध विज्ञानवाद में परिणित हो जाता है। जिसको वर्तमान समाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक समस्याओं के समाधान के रूप में देखा जा सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि बाबा साहेब ने भगवान बुद्ध के उस प्रकाश को उन करोड़ों लोगों तक पहुँचा दिया, जिन्होंने शताब्दियों–शताब्दियों तक अपने ही देश में अपनी झोंपड़ी में अपने जीवन का भार ढोते हुए बिताया है तथा मानवीय श्रम और सेवा के पुरस्कार में दुत्कार, धिक्कार, अशिक्षा और दरिद्रता पायी है। यह बौद्ध पुनर्जागरण है, जो शताब्दियों के बाद भारतीय समाज के शुभ एवं सशक्त परिवर्तन के लिए नई दिशा देता है, और देता रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. एम.एल. सहारे व डॉ. नलिमी अनिल, बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की संघर्ष यात्रा एवं सन्देशः सम्यक् प्रकाशन, दिल्ली 1993; पृ०–434.
2. भगवान बुद्ध और उनका धर्मः बोधिसत्व डॉ. भीमराव अम्बेडकर, बुद्ध प्रकाशन, नागपुर, 1997; पृ०–28
3. डॉ. एम.एल. सहारे व डॉ. नलिमी अनिल, बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर की संघर्ष यात्रा एवं सन्देशः

SAMPLE COPY

सम्यक् प्रकाशन, दिल्ली 1993; पृ०–434.
4. Dhananjaykeer, Dr. Ambedkar Life and mission, Popular Prakashan, Mumbai, Page, 409,
5. डॉ. एल.जी. मेश्राम 'विमल कीर्ति, बौद्ध धर्म के विकास में डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का योगदानः संगीता प्रकाशन, शहादरा, दिल्ली, 2000, पृ० 252.
6. धम्म का तात्पर्य नैतिकता से है।
7. भिक्षु राहुल सांकृत्यायन, नवदीक्षित बौद्ध; सम्यक प्रकाशन, दिल्ली, 2001, पृ०–18.
8. सी.डी.नाईक, बौद्ध वचन तथा अम्बेडकर विचार : क्लपाज पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ–280.
9. वही पृष्ठ–267.
10. वही, पृ०–267.
11. वही, पृ०–267.
12. वही, पृ०–267.
13. वही, पृ०–267.
14. वही, पृ०–267.
15. वही, पृ०–267.
16. वही, पृ०–267.
17. वही, पृ०–267.
18. वही, पृ०–267.
19. वही, पृ०–267.
20. सी.डी.नाईक, बौद्ध वचन तथा अम्बेडकर विचारः क्लपाज पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ०–265.
21. वही पृ०–265.
22. वही, पृ०–265.
23. वही, पृ०–265.
24. सी.डी.नाईक, बौद्ध वचन तथा अम्बेडकर विचारः क्लपाज पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ०–265.
25. बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर द्वारा बौद्ध धर्मान्तरण को उचित ठहराने वाले उनके अनुयायी।
26. सम्पा; अरविन्द सोनटक्के, 22 प्रतिज्ञा अभियान विज्ञान और सत्य का दर्शनः बहुजन साहित्य प्रसार केन्द्र नागपुर, 2016 पृ०–17.
27. डॉ. भीम राव अम्बेडकर; बुद्ध और उनके धम्म का भविष्य, बुद्धा एजूकेशन फाउण्डेशन, ताइपेई ताईवान, 2006, पृ०–3–4.
28. बुद्ध और उनका धम्म, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010.
29. अहीर, डी.सी., डॉ. अम्बेडकर आन बुद्धिज्जम, बॉम्बे, 1982.
30. जाटव डी. आर., बी. आर. अम्बेडकर का राजनीति दर्शन, जयपुर, 1990.
31. जैन भागचन्द, भारत रत्न डॉ. अम्बेडकर और बौद्ध धर्म, नागपुर 1991.
32. भारती कंवल, धम्म–विजय, बोधिसत्व प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981.
33. नाईक सी. डी., बौद्ध वचन तथा अम्बेडकर विचार, क्लपाज पब्लिकेशन, दिल्ली–2006.
34. पाण्डयान के. डेविड, डॉ. अम्बेडकर एण्ड द डाइनामिक्स ऑफ न्यू बुद्धिज्ज़म, ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली–2009.
35. सद्धातिस्स एच., डॉ. अम्बेडकर हाऊ ही बिकेम ए बुद्धिस्ट, महाबोधि विहार, लन्दन, 1956.
36. सिंघ संघसेन (संपा.), अम्बेडकर ऑन बुद्धिस्ट कनवर्जन एण्ड इट्स इम्पेक्ट, नई दिल्ली, 1990.
37. डॉ. अम्बेडकर सम्पूर्ण बाड्मय (खण्ड–6,7,8,9): डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
38. सांकृत्यायन राहुल, नव दीक्षित, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006.
39. कीर धनन्जय, डॉ. अम्बेडकर, लाइफ एण्ड मिशन, पापुलर–प्रकाशन, मुम्बई, 2005.
40. सहारे एण्ड अनिल, डॉ. एम. एल. एण्ड डॉ. नलिनी, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की संघर्ष यात्रा, सम्यक प्रकाशन, 1993.
41. लाल डॉ. अँगने, बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर जीवन और दर्शन, सम्यक प्रकाशन, दिल्ली, 2009
42. सोनटक्के, सम्पादक, अरविन्द, 22 प्रतिज्ञा अभियान विज्ञान और सत्य का दर्शन, बहुजन साहित्य प्रसार केन्द्र, नागपुर, 2016.
43. डॉ. भीम राव अम्बेडकर; बुद्ध और उनके धम्म का भविष्य, बुद्धा एजूकेशन फाउण्डेशन, ताइपेई ताईवान, 2006.

SAMPLE COPY